Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजलिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अप्रैल,मई/2022 ई.

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

ख़िलाफ़त नंबर

April, May-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-2[illegible]0/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 grams/Issue

12.2.2022 को भरतपुर ज़िला मुर्शिदाबाद में आयोजित फ़ज़्ले उम्र तालीमुल क़ुरान क्लासों एवं तक़रीब बिस्मिल्लाह के अवसर पर अराकीन अंसारुल्लाह बच्चों से क़ुरआने करीम सुनते हुए ।

20.2.2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई, तमिलनाडु) द्वारा एक आश्रम में अनाथ बच्चों को भोजन खिलाते हुए अंसारुल्लाह के सदस्य, इस अवसर पर आश्रम के सामने खड़े अंसार ।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

श्री वज़ीर बाबू साहब अमीर ज़िला की अध्यक्षता में 27-02-2022 को श्री ऐ रमेश साहब पुलिस अधिकारी ज़िला महबूबनगर (तेलंगाना) को जमाअती लिट्रेचर भेंट करते हुए वफ़द मज्लिस अंसारुल्लाह महबूबनगर।

श्री वज़ीर बाबू साहब अमीर ज़िला की अध्यक्षता में 27-02-2022 को श्री कृष्णा साहब डी.एस.पी. ज़िला महबूबनगर (तेलंगाना) को जमाअती लिट्रेचर भेंट करते हुए वफ़द मज्लिस अंसारुल्लाह महबूबनगर ।

16-01-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह पटना ग़रीबों को ब्लँकेटस मुफ़्त वितरण करते हुए ।

27-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सेंट थॉमस (चेन्नई) द्वारा आयोजित पिकनिक का दृश्य ।

4-3-2022 को यारीपुरा (कश्मीर) में आयोजित तरबियती इजलास मज्लिस अंसारुल्लाह का एक दृश्य ।

3.3.2022 के दिन संघ के अवसर पर सिख़ श्रद्धालओं के लिए मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान द्वारा आयोजित मेडिकल कैंप का एक दृश्य ।

निगरान
अताउल मुजीब लोन
सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़
उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255
मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313
कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा
प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर
प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

بسم الله الرحمن الرحيم   نحمده ونصلي على رسوله الكريم   وعلى عبده المسيح الموعود

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ
سورة الصف آيت ١٥

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20   **अप्रैल- मई 2022**   **Issue - 4-5**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - अहमदिया ख़लिफात का उज्जवल भविष्य	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन जमाअत अहमदिया की ख़लीफ़ा की हैसियत दुनिया के समस्त बादशाहों से ज़्यादा है	6
अहमदियत की ख़लीफ़ाओं की जमाअत अहमदिया के लोगों के साथ इख़लास तथा मुहब्बत	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○ (56 सूरत नूर:आयत)

अनुवाद - तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उन से अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि इस ने इन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उन के लिए उन के धर्म को, जो उस ने उन के लिए पसन्द किया, ज़रूर मज़बूती प्रदान करेगा और उन की ख़ौफ़ की हालत के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा वे मेरी इबादत करेंगे मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे और जो उस के बाद भी नाशुक्री करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

दर्सुल हदीस

عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : تَكُوْنُ النُّبُوَّةُ فِيْكُمْ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا عَاضًّا فَتَكُوْنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ تَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ مُلْكًا جَبْرِيَّةً فَيَكُوْنُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ يَكُوْنَ ثُمَّ يَرْفَعُهَا اللّٰهُ تَعَالٰى ثُمَّ تَكُوْنُ خِلَافَةٌ عَلٰى مِنْهَاجِ النُّبُوَّةِ ثُمَّ سَكَتَ۔

(मस्नद अहमद भाग 4 पृष्ठ 273)

अनुवाद - हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी अल्लाह तआला अन्हो बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी जब तक अल्लाह चाहेगा फिर वह उस को उठा लेगा और फिर नबुव्वत की तरीका पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी। फिर अल्लाह तआला जब चाहेगा इस नेअमत को भी उठा लेगा। फिर उस की तक़दीर के अनुसार कष्ट पहुचाने वाली बादशाहत स्थापित होगी जिससे लोग तंगी महसूस करेंगे जब यह ज़माना ख़त्म होगा तो इस की दूसरी तक़दीर के अनुसार इस से भी बढ़कर अत्याचार करने वाली बादशाहत स्थापित होगी यहां तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आएगा और इस ज़ुल्म के ज़माना को ख़त्म कर देगा। उस के बाद फिर नबुव्वत की तरीका पर ख़िलाफ़त स्थापित होगी। यह फ़र्मा कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश हो गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

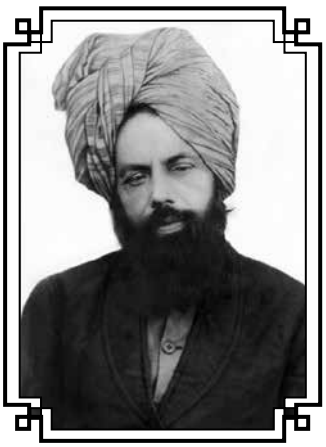

"यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है तथा जब से कि उसने इंसान को धरती पर जन्म दिया है सदैव इस सुन्नत को प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है और उनको ग़ल्ब: देता है, जैसा कि वह फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِیْ (अलमुजादिला : 23)और ग़लब: से अभिप्राय: यह है जैसा कि नबियों तथा रसूलों का यह अभिप्राय: होता है कि ख़ुदा की हुज्जत धरती पर पूरी हो जाए तथा उसका कोई मुक़ाबला न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला प्रभाव पूर्ण निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है तथा जिस सत्य मार्ग को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीजारोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है किन्तु उसका सम्पूर्ण रूप उनके हाथ से नहीं करता अपितु ऐसे समय पर उनको मौत देकर जो प्रत्यक्षत: एक असफलता का भय अपने साथ रखता है, विरोधियों को हंसी और ठट्ठे, आरोप प्रतरोप का अवसर देता है तथा जब वे हंसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ अपूर्ण रह गए थे अपनी सम्पूर्ण स्थिति को पहुंचते हैं, अर्थात दो प्रकार की क़ुदरतों को प्रकट करता है। 1- प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। 2- द्वित्तीय ऐसे समय पर जब नबी के निधन के बाद कठिनाईयों का सामना पैदा हो जाता है तथा दुश्मनों का प्रभाव बढ़ जाता है तथा समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया तथा विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत नष्ट हो जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी असमंजस में पड़ जाते हैं तथा उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई भाग्य हीन लोग वापस पलटने का मार्ग धारण कर लेते हैं, तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्ति शाली क़ुदरत प्रकट करता है तथा गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। इस प्रकार वह जो अन्त समय तक धैर्य रखता है, ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है .....सो हे अज़ीज़ो! जब कि आदि काल से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है ता विरोधियों की दो झूठी ख़ुशयों का सर्वनाश करके दिखलावे, सो अब सम्भव नहीं कि ख़ुदा तआला अपने चिरकालीन विधान को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास बयान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है क्योंकि वह दायमी है जिसका निरन्तर क्रम प्रलय तक नहीं टूटेगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। किन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीन-ए-अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात के विषय में नहीं है अपितु तुम्हारे लिए वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयायी हैं प्रलय तक दूसरों पर ग़ल्ब: दूँगा। सो अवश्य है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ता बाद इसके कि वह दिन आवे जो पुराने वादे का दिन है, वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सच्चा ख़ुदा है। वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया, यद्यपि ये दिन दुनिया के अन्तिम दिन हैं और अनेक कठिनाईयाँ हैं जिनके अवतरण का समय है परन्तु अवश्य है कि यह दुनिया स्थापित रहे जब तक वे सारी बातें पूरी न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने सूचना दी। मैं ख़ुदा की ओर से एक क़ुदरत के रंग में प्रकट हुआ और मैं ख़ुदा की एक स्पष्ट क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ अन्य अस्तित्व होंगे जो दूसरी क़ुदरत के द्योतक होंगे।" (मल्फ़ूज़ात भाग 2, पृष्ठ 561 से 564 तक, संस्करण 2003 क़ादियान)

सम्पादकीय

अहमदिया ख़िलाफ़त का उज्जवल भविष्य

भविष्यवाणियों से स्पष्ट होता है कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया का ज़माना कम से कम एक हज़ार साल पर आधारित होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"और फिर सातवाँ हज़ार ख़ुदा और इस के मसीह का और हर एक बरकत और ईमान और भलाई और तक़्वा और तौहीद और ख़ुदा-परस्ती और हर एक प्रकार की नेकी और हिदायत का ज़माना है। अब हम सातवें हज़ार के सिर पर हैं। इस के बाद किसी दूसरे मसीह को क़दम रखने की जगह नहीं क्योंकि ज़माने सात ही हैं जो नेकी और बुराई में बांटे गए हैं। इस बंटवारे को समस्त नबियों ने वर्णन किया है और दुनिया में कोई भविष्यवाणी इस ताकत और निरन्तरता के साथ नहीं होगी जैसा कि समस्त नबियों ने आख़री मसीह के बारे में की है।"

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 20 सफ़ा186)

अल्लाह तआला ने आप को कश्फ़ और इल्हाम के द्वारा समझाया कि दुनिया की कुल उम्र सात हज़ार साल है और आपका ज़माना सातवें हज़ार साल पर फैला है। आप फरमाते हैं: ''.....हाज़अ मुइ कश्फ़ अले रब्बी ।"

(ख़ुत्बा इलहामीया, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 16 पृष्ठ 330)

इसी तरह फ़रमाया "सूरत असर में दुनिया की तारीख़ मौजूद है जिस पर ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम से मुझको सूचना दी है।"

(अल्हकम भाग 6 पृष्ठ 25,17 जुलाई 1902 ई)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत वाली ख़िलाफ़त का ज़माना यक़ीनी तौर पर कम से कम एक हज़ार साल पर आधारित है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहेमहुल्लाह ने अपनी ख़िलाफ़त के आरम्भ में बड़े शौकत वाले शब्दों में इस बात को वर्णन फ़रमाया है। आप फरमाते हैं:

"अब आइन्दा इंशाअल्लाह ख़िलाफ़त अहमदिया को कोई ख़तरा नहीं होगा। जमाअत बलूग़त की अवस्था पर पहुंच चुकी है ख़ुदा की नज़र में। और कोई दुश्मन आँख,कोई दुश्मन दिल, कोई दुश्मन कोशिश इस जमाअत का बाल भी टेड़ा नहीं कर सकेगी और ख़िलाफ़त अहमदिया इंशाअल्लाह इसी शान के साथ उन्नति करती रहेगी जिस शान के साथ अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादे फ़रमाए हैं कि कम से कम एक हज़ार साल तक यह जमाअत ज़िन्दा रहेगी।"

(ख़ुत्बा जुम्अ 18 जून 1982 ई ख़ुतबात ताहिर भाग पृष्ठ 118)

क़ुरआन करीम की भविष्यवाणी के अनुसार इस ख़िलाफ़त में तौहीद का ग़लबा होगा, शिर्क मिट जाएगा, ज़ुल्म तथा अत्याचार और हर प्रकार का फ़साद समाप्त होगा और अमन तथा सलामती और सुलह का ज़माना जारी होगा। अल्लाह के फ़ज़ल से तर्कों तथा प्रमाणों की दृष्टि से तो जमाअत अहमदिया प्रभुत्व पा चुकी है लेकिन संख्या का ज़ाहिरी ग़ल्बा भी इंशा अल्लाह पहली तीन सदियों के भीतर निर्धारित है। इस के बाद कम से कम सात सौ साल का ज़माना अमन तथा शान्ति और प्यार मुहब्बत का होगा। जब यह एक हज़ार साल समाप्त होंगे तो उस के बाद जब अल्लाह चाहेगा वह आख़िरी घड़ियाँ भी आ जाएंगी जब लोगों में सब से बुरे लोग पैदा होंगे जिन

पर क़ियामत बरपा होगी। लेकिन वह इतना मामूली समय होगा जिसको ज़माना या युग नहीं कहा जा सकता। इसी न आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस को ज़मानों में गिना है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं

"अत: आप कामिल वफ़ादारी के साथ ख़ुदा की क़ुदरत सानिया के साथ सम्बन्ध जोड़े रखें मैं आपको ख़ुशख़बरी देता हूँ और ख़ुदा की क़सम खा कर आपसे कहता हूँ कि ख़ुदा की क़ुदरत कभी भी आपसे सम्बन्ध नहीं तोड़ेगी। हरगिज़ नहीं तोड़ेगी। हरगिज़ नहीं तोड़ेगी। यहां तक कि इस्लाम को कामिल ग़लबा न प्राप्त हो जाए।" (अलफ़ज़ल 8 मार्च 2022 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अत: अगर आपने तरक़्क़ी करनी है और दुनिया पर ग़ालिब आना है तो मेरी आपको यही नसीहत है और मेरा यही पैग़ाम है कि आप ख़िलाफ़त से जुड़ जाएं। इस अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रखें। हमारी सारी उन्नतियों का आधार ख़िलाफ़त से जुड़े रहने में ही है।" (अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 23 मई 2003 पृष्ठ 1)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इख़लास से ख़िलाफ़त से जुड़ा रहने वाली बनाए। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

जमाअत अहमदिया की ख़लीफ़ा की हैसियत दुनिया के समस्त बादशाहों से ज़्यादा है

क़ुरआन करीम और सय्यदना हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानतम भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद 27 मई 1908 ई को जमाअत अहमदिया इस क़ुदरत सानिया के बरकतों वाले स्थायी ज़माना में दाख़िल हो गई जिसके द्वारा समस्त झूठे धर्मों पर इस्लाम को ग़लबा प्राप्त होना निर्दिष्ट है। और आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 114 साल का इतिहास गवाह है कि ख़िलाफ़त अहमदिया इन समस्त बरकतों और रहमतों का मर्कज़ बनते हुए न केवल अहमदिया जगत बल्कि समस्त इस्लामी जगत और सारी दुनिया की दीनी और दुनियावी उन्नति के लिए दिन रात कोशिश कर रही है

जहां दुनिया की विभिन्न भाषाओं में क़ुरआन-ए-क़रीम के अनुवाद के प्रचार का काम जारी है वहां ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की निगरानी में आज सारी दुनिया में विभिन्न भाषाओं में बड़े व्यापक स्तर पर किताबें और लिट्रेचर के प्रकाशन का काम जारी है। कादियान में भी 10 क्षेत्रीय भाषाओं के डैसक स्थापित हैं। लाखों की संख्या में ये लिट्रेचर प्रत्येक वर्ष प्रकाशित हो रहा है और इसी तरह इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडीया के द्वारा और सोशल मीडीया पर अमन वाले इस्लाम का पैग़ाम पहुंच रहे है।

सबसे बढ़कर यह कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल के रूह-परवर ख़ुत्बे और ख़िताब आज इस्लामी जगत में में एक इन्क़िलाब पैदा कर रहे हैं। ये ख़ुत्बे सारी दुनिया में विभिन्न भाषाओं में सुने जाते हैं। MTA के विभिन्न चैनलों पर विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के साथ प्रसारित होते हैं। अफ़्रीक़ा के जमाअत के और दूसरे रेडियो स्टेशों पर बहुत सी भाषाओं में अनुवाद के साथ प्रसारित होते हैं। विभिन्न देशों ने अपनी अपनी वेबसाइट बनाई हुई हैं। इन पर इन देशों की भाषाओं में अपलोड किए जाते हैं। ख़लीफ़तुल-मसीह की आवाज़ सारी दुनिया तक पहुंचाने के लिए आज एक ऐसा निज़ाम जारी है जिसकी तारीख़-ए-आलम में और इस्लामी जगत में कोई तुलना नहीं मिलती। इन ख़ुत्बों से जहां जमाअत के लोगों की ज़िंदगीयां सँवरती हैं और ईमानों में ताज़गी मिलती है और एक रुहानी माइदा का सामान उपलब्ध करते हैं वहां दूसरे भी इन ख़ुत्बों से लाभ पाते हैं और जहां उन के अहमदियत में दाख़िल होने का कारण बनते हैं वहां उनकी ज़िंदगीयों में एक महान इन्क़िलाब पैदा करता है।

हज़रत मुस्लहे मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया था:"जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा की हैसियत दुनिया के समस्त बादशाहों और शहंशाहों से अधिक है। वह दुनिया में ख़ुदा और रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नुमाइंदा है।"

(अलफ़ज़ल 27 अगस्त 1937 ई पृष्ठ 8)

आज सारी दुनिया में जमाअत अहमदिया को एक अलग और विशेष पहचान प्राप्त कर चुके है। चूँकि सारी धरती पर यह अकेली जमाअत है जिसमें आसमानी ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी है। आज इस्लामी जगत में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाएं तो सिवाए एक वजूद के और कोई ऐसा वजूद नहीं मिलता जो इस्लामी जगत के लिए और मानव जाति के लिए रातों को उठकर अपने रब के हुज़ूर तड़पता हो, रोता हो और प्रत्येक के लिए ख़ैर और भलाई मांगता हो।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"कौन सा दुनियावी लीडर है जो बीमारों के लिए दुआएं भी करता हो। कौन सा लीडर है जो अपनी क़ौम की बच्चियों के रिश्तों के लिए बेचैन और उनके लिए दुआ करता हो। कौन सा लीडर है जिसको बच्चों की शिक्षा की फ़िक्र हो।...दुनिया का कोई देश नहीं जहां रात सोने से पहले कल्पना में मैं न पहुंचता हूँ और उनके लिए सोते वक़्त भी और जागते वक़्त भी दुआ न हो। ये मैं बातें इस लिए नहीं बता रहा कि कोई उपकार है। यह मेरा फ़र्ज़ है। अल्लाह तआला करे कि इस से बढ़कर में फ़र्ज़ अदा करने वाला बनूं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 6 जून 2014 ई)

ऐसी महान ख़िलाफ़त की बरकतें प्राप्त करने के लिए हमें समय के ख़लीफ़ा की हिदायतों पर अनुकरण करने की अल्लाह तआला तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

अहमदियत की ख़लीफ़ाओं की जमाअत अहमदिया के लोगों के साथ इख़लास तथा मुहब्बत

(इदारा)

सारी रात दुआ में गुज़ार दी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी चौधरी हाकिम दीन साहब रज़ि बोर्डिंग के एक मुलाज़िम थे। उनकी बीवी , पहले बच्चे के जन्म के वक़्त बहुत कष्ट में थी। इस वेदना भरी हालत में रात के बारह बजे वह हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ि के दरवाज़ा पर हाज़िर हुए। दरवाज़ा पर दस्तक दी। आवाज़ सुनकर पूछा कौन है? आज्ञा मिलने पर अंदर जा कर ज़चगी की तकलीफ़ का वर्णन किया। और दुआ की दरख़ास्त की। हुज़ूर फ़ौरन उठे, अंदर जा कर एक खजूर लेकर आए और इस पर दुआ कर के उन्हें दी फ़रमाया;

"यह अपनी बीवी को खिला दें और जब बच्चा हो जाए तो मुझे भी सूचना दें।"

चौधरी हाकिम दीन साहिब वर्णन करते हैं कि मैं वापस आया खजूर बीवी को खिला दी और थोड़ी ही देर में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बच्ची का जन्म हुआ। रात बहुत देर हो चुकी थी मैंने ख़्याल किया कि इतनी रात गए दोबारा हुज़ूर को इस सूचना के लिए जगाना उनुचित नहीं। नमाज़ फ़ज्र में हाज़िर हो कर मैंने निवेदन किया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से खजूर खिलाने के बाद बच्ची पैदा हो गई थी। इस पर हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ि ने फ़रमाया

"मियां हाकिम दीन! तुमने अपनी बीवी को खजूर खिला दी और तुम्हारी बच्ची पैदा हो गई। और फिर तुम और तुम्हारी बीवी आराम से सो गए। मुझे भी सूचना कर देते तो मैं भी आराम से सोता रहता। मैं तो सारी रात जागता रहा और तुम्हारी बीवी के लिए दुआ करता रहा।"

चौधरी हाकिम दीन साहिब ने यह घटना वर्णन की और अपने आप रो पड़े और कहने लगे;"कहाँ ग़रीब हाकिम दीन और कहाँ महान नूरुद्दीन।"

(मुबश्शरीन अहमद पृष्ठ 38 एवं अस्हाबे अहमद 8 पृष्ठ 712)

एक मात्र इच्छा

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने 15 जुलाई 1924 ई को बंबई से लंदन के लिए रवाना होते हुए जमाअत के लोगों के नाम एक पैग़ाम में फ़रमाया कि "तुम अंदाज़ा भी नहीं कर सकते कि मुझे कितनी मोहब्बत तुम से है आप लोगों से जुदा होना मेरे लिए कितना दर्दनाक था और आप लोगों को पीछे छोड़ना मेरे लिए कितना सदमा पहुंचाने वाला हुआ लेकिन यह जुदाई सिर्फ़ शारीरिक है मेरी रूह हमेशा तुम्हारे साथ थी और है और रहेगी। मैं ज़िन्दगी में या मौत मैं तुम्हारा ही हूँ। तुम्हारी भलाई मेरे दिल की एक मात्र इच्छा है और तुम्हारा दुनयावी और रुहानी मंज़िल मक़्सूद तक पहुंचना मेरी एक मात्र इच्छा।

(अलफ़ज़ल 18 जुलाई 1924 ई)

मैं इस का बाप हूँ

साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की जमाअत के लोगों से मुहब्बत का ज़िक्र करते हुए वर्णन करते हैं कि"दार मसीह" के जिस भाग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निवास था इस से जुड़ा जो मकान का हिस्सा था

इस में हमारी माता और बच्चे रहते थे। इस के सेहन में बच्चे कुछ घरेलू खेलें शाम को खेलते थे। इसी तरह की एक खेल हम शाम को खेल रहे थे एक लड़की जो मेरी हम उम्र थी(उस वक़्त मेरी आयु आठ नौ साल की होगी)उसने कोई ऐसी बात की जिस पर मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैंने उस के मुँह पर छपड़ मारा। ठीक उस वक़्त अब्बा जान सेहन में दाख़िल हो रहे थे। उन्होंने मुझे ठप्पड़ मारते हुए देख लिया था। सीधे मेरी तरफ़ आए। मुझे अपने पास बुला कर खड़ा किया और इस बच्ची को भी पास बुलाया और उसे कहा कि उसने तुम्हें मारा है तुम भी इस के मुँह पर थप्पड़ मारो। लेकिन फिर भी उसे साहस न हुआ। इस के बाद ग़ुस्से में और जोश में मुझे सम्बोधित हो कर कहा कि अगर तुम यह समझते हो कि इस का बाप नहीं है इस लिए तुम जो चाहो इस से व्यवहार कर सकते हो तो अच्छी तरह सन लो कि मैं इस का बाप हूँ। और अब अगर तुमने इस पर उंगली भी उठाई तो मैं तुम्हें सख़्त सज़ा दूंगा। (मुझे बाद में पता चला कि यह बच्ची एक सय्यद ख़ानदान की यतीम बच्ची थी जो अब्बा जान ने अपने निगरानी में ले ली थी।)

(यादों के दरीचे ,लेखक साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद पृष्ठ :15)

रब रहीम से क़बूलीयत दुआ का निशान

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहिमहुल्लाह तआला जमाअत के लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं। फ़रमाया:"मैं आप में से आपकी तरह का ही एक इन्सान हूँ और आप में से हर एक के लिए अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इतना प्यार पैदा किया है कि आप लोग इस की कल्पना भी नहीं कर सकते कई बार सिज्दा में मैं जमाअत के लिए और जमाअत के लोगों के लिए यूं दुआ करता हूँ कि हे ख़ुदा जो मुझे ख़त लिखना चाहते थे लेकिन किसी सुस्ती के कारण से नहीं लिख सके उनकी मुरादें पूरी कर दे। और हे ख़ुदा जिन्हों ने मुझे ख़त लिखा और न उन्हें ख़्याल आया है कि दुआ के लिए ख़त लिखें अगर उन्हें कोई तकलीफ़ है या उनकी कोई आवश्यकता और ज़रूरत है तो उनकी तकलीफ़ को दूर कर दे और ज़रूरतें भी पूरी कर दे।

(दैनिक अलफ़ज़ल रब्वह 21 दिसम्बर 1922 ई)

उपकार का निरन्तर जारी क्रम

आदरणीय मन्ज़ूर अहमद सईद साहिब कारकुन वक़्फ़ जदीद वर्णन करते हैं कि जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह तआला नाज़िम इरशाद वक़्फ़ जदीद थे तो एक दिन शाम को आप दफ़्तर तशरीफ़ लाए। मैं बाज़ार से दूध लेकर आ रहा था। पूछा कहाँ से आ रहे हो? मैंने अर्ज़ की कि दूध लेकर आ रहा फ़रमाया: बाज़ार से अच्छा दूध मिल जाता है? मैंने निवेदन किया की बस जैसा भी हो ज़रूरत के अनुसार लेना ही है। फ़रमाने लगे कितना दूध लाए हो मैंने कहा एक किलो। यह पूछ कर आप ख़ामोश हो गए। अगले दिन सुबह दरवाज़ा पर दस्तक हुई। मैंने जाकर दरवाज़ा खोला तो हुज़ूर रज़ि का बावर्ची दूध लेकर खड़ा था। उसने कहा मियां साहिब ने दूध भेजा है। अत: मैंने रख लिया और फिर बाक़ायदगी के साथ रोज़ाना दूध आना शुरू हो गया और जब एक महीना सम्पूर्ण हुआ तो मैं बिल बना कर ले गया और दूध की रक़म हुज़ूर को पेश की हुज़ूर ने फ़रमाया यह क्या है। मैंने कहा दूध के पैसे। तो बड़े प्यार से फ़रमाने लगे हम कोई दूध बेचते हैं? पैसे न लिए और निरन्तर दूध भिजवाते रहे। एक दिन बावर्ची ने कहा कि कल मैं कहीं जा रहा हूँ इसलिए आप ख़ुद ही जाकर दूध ले आएं। अगला दिन जुमा का था इसलिए

मैंने सोचा कि दोपहर को ले आएँगे। लेकिन दस बजे के क़रीब दरवाज़ा खटका। मैंने जा कर देखा तो हज़ूर खड़े हैं और हाथ में दूध पकड़ा हुआ है। मैं देखकर हैरान रह गया कि कैसा महान आक़ा है कि ग़ुलामों की सेवा करता फिरता है। मुझे देखकर फ़रमाने लगे बावर्ची छुट्टी पर था इसलिए मैंने कहा चलो ख़ुद ही दे आता हूँ। निसन्देह आप का वजूद सय्यदुल-क़ौम ख़ादेमहुम की मुँह बोलती तस्वीर था। आपकी इस स्नेह जिसका सारी उम्र भी शुक्रिया अदा नहीं किया जा सकता,का क्रम बदस्तूर जारी था कि एक दिन बेगम साहिबा ने पैग़ाम भेजा कि मन्ज़ूर साहिब गर्मी के कारण से दूध बहुत कम हो गया है। इसलिए कल से आप अपना इंतिज़ाम कर लें। लेकिन अगले दिन बावर्ची फिर दूध ले आया मैंने कहा यह क्या? कल तो तुमने ख़ुद ही कहा था कि अपना इंतिज़ाम कर लें और आज फिर ले आए हो? बावर्ची ने कहा कल इसी कारण से घर में बेहस चली कि दूध कम है इसलिए तुम अपना इंतिज़ाम ख़ुद कर लो लेकिन मियां साहिब ने फ़रमाया कि मंज़ूर को दूध ज़रूर भेजना है ख़ुद बे-शक बाज़ार से मंगवाना पड़े। अत: यह उपकार का न समाप्त होने वाला सिलसिला जारी है और तीस पैंतीस साल हो गए हैं यह सिलसिला बिना किसी रुकावट के जारी है। और मज़ीद लुतफ़ यह कि हुज़ूर के देहान्त के बाद भी यह सिलसिला जारी है और रोज़ाना उसी तरीक़ा के अनुसार एक किलो दूध इस विनीत को नसीब हो रहा है।

(मासिक ख़ालिद सय्यदना ताहिर नम्बर 2004 ई पृष्ठ 178)

बारिश में खड़े रहे

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ की जमाअत के लोंगे से स्नेह और मुहब्बत की एक घटना मुनीर अहमद जावेद साहिब प्राईवेट सैक्रेटरी हुज़ूर अनवर यूं वर्णन करते हैं कि एक बार जलसा लंदन के अवसर पर शाम के वक़्त बारिश शुरू हो गई क़ाफ़िले जलसा-ए-गाह से वापस अपनी अपनी क़ियाम गाहों की तरफ़ रवाना हो रहे थे कि बारिश के कारण से भीड हो गई। हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला को मालूम हुआ तो आप अपनी समस्त मस्रूफ़ियत को छोड़ कर ख़ुद वहां तशरीफ़ ले आए और अहबाब जमाअत के पास उस वक़्त तक वहीं बारिश में खड़े रहे और जमाअत के लोगों के हौसले बढ़ाते रहे जब तक के सारे मेहमान बसों में बैठ कर अपनी अपनी मंज़िल की तरफ़ रवाना न हो गए।(डाक्योमैंटरी जलसा सालाना में हुज़ूर की व्यस्तता, मुनीर अहमद साहिब)

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"जमाअत अहमदिया के लोग ही वे ख़ुश-क़िस्मत हैं जिनकी चिन्ता समय के ख़लीफ़ा को रहती है।... कोई मसला भी दुनिया में फैले हुए अहमदियों का चाहे वह ज़ाती हो या जमाअती ऐसा नहीं जिस पर वक़्त के ख़लीफ़ की नज़र न हो। और इस के हल के लिए वह व्यवहारिक कोशिश के इलावा अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकता न हो। इस से दुआएं न मांगता हो....दुनिया का कोई मुल्क नहीं जहां रात सोने से पहले कल्पना की दृष्टि से मैं न पहुंचता हूँ और उनके लिए सोते वक़्त भी और जागते वक़्त भी दुआ न करता हूं ।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 6 जून 2014ई)

अल्लाह तआला हमें वास्तविक अर्थों में ख़िलाफ़त का आज्ञाकारी बनाए। आमीन